DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-2 ,UNIT-6,
LEADERSHIP:SITUATIONAL THEORY

LECTURE-24

SITUATIONAL THEORY

परिस्थितिजन्य सिद्धांत

परिस्थितिजन्य सिद्धांत का प्रतिपादन शीलगुण सिद्धांत से उत्पन्न असंतुष्टि के फलस्वरूप हुआ जब समाज मनोवैज्ञानिकों को यह पूर्ण विश्वास हो गया की शीलगुण सिद्धांत से नेतृत्व के उदभव या आविर्भाव की व्याख्या नहीं की जा सकती है तो इन लोगो ने समूह परिस्थिति की विशेषताओं का वर्णन किया |इस सिद्धांत के अनुसार नेतृत्व उदभव में व्यक्ति के शील गुण का हाथ नहीं बल्कि समूह परिस्थिति की विशेषताओं का हाथ होता है समूह का नेता कौन व्यक्ति होगा इसका निर्धारण व्यक्ति के व्यक्तित्व के शील गुणों द्वारा नहीं बल्कि समूह की वर्तमान परिस्थिति या समय द्वारा होता है | इसलिए इस सिद्धांत को समय सिद्धांत या जिटागिस्ट सिद्धांत भी कहा जाता है |स्पष्टतः तब उस सिद्धांत के अनुसार नेता जन्मजात नहीं होते बल्कि परिस्थितिओं में ढल कर उत्पन्न होते है | इस सिद्धांत के

अनुसार एक व्यक्ति एक परिस्थिति में नेता नहीं भी हो सकता है क्योंकि फेल्डमेन (FELD MAN 1985) ने इस सिद्धांत की व्याख्या करते हुए कहा कि “परिस्थितिक सिद्धांत यह बतलाता है की कोई ख़ास व्यक्ति एक परिस्थिति में नेता हो सकता है परन्तु दुसरे में नहीं क्योंकि परिस्थिति की विशेषताओं ना की व्यक्ति की विशेषताओं द्वारा नेतृत्व की प्राप्ति होती है |

स्पष्ट हुआ की परिस्थितिजन्य सिद्धांत के अनुसार समूह का नेता कौन होगा ,इस बात का निर्धारण परिस्थिति या समय करता है |

कूपर तथा मैकगाँफ (1969) ने इस सिद्धांत के समर्थन में अध्ययन कर बताया की यदि हिटलर ने जर्मनी के बदले अमेरिका में अपना आन्दोलन छेड़ा होता है ,तो उसे जेल में फेक दिया जाता या किसी मानसिक रोगशाला में भर्ती करा दिया जाता |परन्तु जर्मनी में उस समय की परिस्थिति ही कुछ ऐसी थी जो उन्हें नेता बना दिया |भारत में भी इसके कुछ ताज़ा उदाहरण है |अगर श्रीमती इंद्रागाँधी को 31OCT 1984 को गोली मार कर हत्या नहीं कर दी गयी होती तो क्या तुरंत राजीव गाँधी भारत के प्रधानमन्त्री होते शायद नहीं |परन्तु उनकी हत्या से उत्पन्न परिस्थिति ही कुछ इस प्रकार की थी की उन्हें भारत वासीयों का नेता बना दिया गया |उसी तरह से 1974 के पहले श्री जय प्रकाश नारायण ने उतना सफल नेतृत्व लोगों को नहीं दिया |परन्तु मार्च 1974 के बाद कुछ ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो गयी जिसके कारण वे एक सफल क्रांतिकारी नेता बनकर लोगों के सामने उभर आये |स्पष्ट है की एक ख़ास परिस्थिति या समय जब तक नहीं आता व्यक्ति नेता के रूप में नहीं उभर पाता है | अतः समय बलवान होता है ना की स्वयं व्यक्ति|

कार्टर एवं उनके सहयोगियों (1951) तथा क्रेच एवं उनके सहयोगियों 1962 के अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है की जब समूह बड़ा होता है तो उसमे कई तरह के नेता के उत्पन्न होने की सम्भावना अधिक हो जाती है |कुरोकावा तथा मिसुमी 1975 ने अपने अध्ययन के आधार पर बतलाया है की समूह के आकार द्वारा नेतृत्व के प्रकार का भी निर्धारण होता है जैसे कार्य –उन्मुखी नेतृत्व की उत्पत्ति बड़े समूहों में अधिक होती है परन्तु छोटे समूहों में साम्वेगिक नेताओं की उत्पत्ति अधिक होती है उसी तरह से डायसन एवं उनके सहयोगिओं (1976) ने बतलाया है की समजातीय समूह में नाते का उद्भव देरी से होता है | कुछ अध्ययनों से यह पता चलता है की समूह की संकटकालीन परिस्थिति का भी प्रभाव समूह नेतृत्व में उद्भव पर पड़ता है| यदि समूह के सामने संकट आ गया है या समुह के सदस्यों में प्रतियोगिता की भावना काफी तीव्र हो जाती है |

कुछ अध्ययनों से यह भी पता चलता हैं की समूह की आवश्यकता से भी नेतृत्व का उद्भव प्रभावित होता है |प्रत्येक परिस्थिति में समूह की कुछ खास-ख़ास आवश्यकताएँ होती है |जो व्यक्ति उन आवश्कताओं की पूर्ण संतुष्टि कर देने में समर्थ हो जाता है ,समूह उसे अपना नेता मान लेता है |भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन की मुख्य आवश्यकता एक ऐसी नेतृत्व की थी जो भारतीयों को अंग्रेजी राज्य में संतोषजनक ढंग से मुक्ति दिला दे |चूँकि इस आवश्यकता की पूर्ति करने में महात्मा गाँधी ,नेहरु ,आदि व्यक्तियों ने सफलता प्राप्त किया अतः भारतीयों ने उन्हें अपना नेता स्वीकार कर लिया | वेल्स (1953) ने अपने अधययन के आधार पर भी दिखलाया है की जब समूह आवश्यकता परिवर्तित हो जाती है तो इससे समूह के नेता में भी परिवर्तन आ जाता है |ऐसा

इसलिए होता है क्योंकि परिवर्तित आवश्यकता को पुराने नेता संतुष्ट नहीं कर पाते है |बाद में वार्नलुन्ड ने भी वेल्स के निष्कर्ष की पुष्टि किया है क्योंकि उन्होंने अपने प्रयोग में पाया की समूह के कार्य के बदलने पर नेतृत्व बदल जाता है |

इस तरह से यह स्पष्ट है की नेतृत्व के उद्भव पर कई प्रकार के परिस्थितिजन्य कारको का प्रभाव परता है |परिस्थिति की विशेषताओं से सिर्फ यह नहीं पता चलता है की समूह का नेता कौन होगा बल्कि यह भी पता चलता है की वह व्यक्ति किस प्रकार का नेता होगा |सैनफोर्ड 1950 ने अपने अध्ययन में पाया की सत्ता धारी अनुयायी समूह उन्मुखी या प्रजातंत्रात्मक नेता नहीं पसंद करते है |वे सत्ता धारी ही पसंद करते है |

हालपिन (1954) के अनुसार कम खतरे वाले कार्यों को करने में अनुयायी सत्ताधारी एवं कार्य –उन्मुखी नेता चाहते है |

परिस्थितिजन्य सिद्धांत की कुछ आलोचनाये भी है जो निम्नलिखित है-

(1) इस सिद्धांत द्वारा इस तथ्य की व्याख्या नहीं हो पाती है की सामान परिस्थिति होने पर भी क्यों कुछ लोग हमेशा नेता बने रहते है तथा क्यों कुछ लोग हमेशा अनुयायी ही बने रहते है |
(2) यह सिद्धांत यह भी नहीं बता पाता की किस परिस्थिति विशेष में कौन व्यक्ति नेता बनेगा |फोल्डमैन (1985) ने इस आलोचना के समर्थन में अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा है की इस सिद्धांत में “सबसे बड़ी कठिनाई यह है की हम लोग यह बतलाने में असमर्थ रहते है की कौन व्यक्ति नेता चुना जाएगा |अतः नेता

कौन होने जा रहा है उसका पूर्वानुमान या पूर्व कथन करने में परिस्थितिजन्य सिद्धांत अपर्याप्त है" |

निष्कर्ष यह है की नेतृत्व के आविर्भाव या उद्भव की व्याख्या करने में परिस्थितिजन्य सिद्धांत अपने आप में उसी तरह अधुरा है जिस तरह शीलगुण सिद्धांत |सचमुच में नेतृत्व की पूर्व व्याख्या तभी संतोषजनक ढंग से हो पाती है जब हम उसे परिस्थितिजन्य सिद्धांत एवं शीलगुण सिद्धांत दोनों से ही सम्बंधित करते है |अतः नेतृत्व का सबसे उत्तम सिद्धांत वह है जो व्यक्ति के शील-गुण एवं परिस्थिति की विशेषताओं दोनों को ध्यान में रखता है |